RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 March 2019, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd March 2019

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : सोलहवां
अंक : ग्यारहवां
मार्च : 2019

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा अभ्यास में बिठाने से पहले
भक्ति भक्तन हूँ बण आई — 5

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
सन्त किसे कहते हैं ?
(गुरु रामदास जी की बानी) (16 पी.एस. राजस्थान) — 9

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से
अहंकार — 33

सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी
धन्य अजायब — 34

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक : **नन्दनी**
सहयोग : **परमजीत सिंह**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस - 1, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

99 50 55 66 71 80 79 08 46 01 - 204- मूल्य - पाँच रुपये

E-mail : dhanajaibs@gmail.com **Website :** www.ajaibbani.org

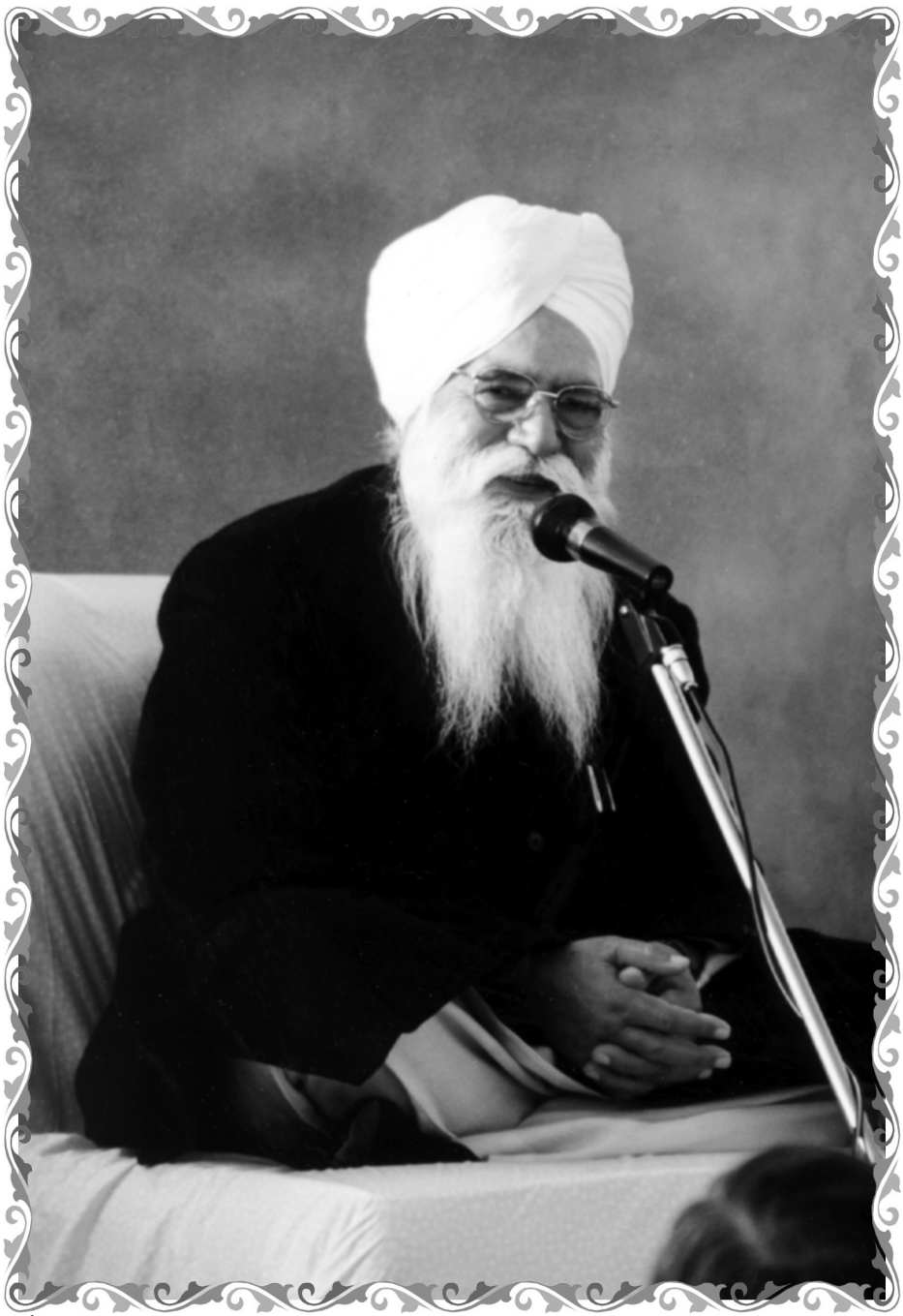

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा अभ्यास में बिठाने से पहले

भक्ति भक्तन हूँ बण आई

हाँ भई! अभ्यास में बैठने से पहले जरूरी बात यह है कि मन को शान्त करें क्योंकि शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को बोझ न समझें प्रेम-प्यार से करें। आप यह न समझें कि हमने जो मिनट-सैकिंड मालिक की याद में बिताया है यह लेखे में नहीं। गुरु नानकदेव जी का वाक है:

हर धन के भर लेहो भंडार, नानक गुरु पूरे नमस्कार।

हम जो थोड़ा बहुत अभ्यास कर रहे हैं यह एक किस्म का भंडार भर रहे हैं बेशक जीव को इस बात का पता नहीं कि मेरा कुछ बन रहा है। हम जितना भी भजन-अभ्यास कर रहे हैं इसे सतगुरु लेखे में रखता है। जिस तरह छोटा बच्चा कौड़ियों का आशिक है उसे पता नहीं कि पौंड की क्या कीमत है? अगर गुरु हमें इसका तजुर्बा जल्दी से दे दें तो हम रूहानियत को दुनिया की मान-बड़ाई में या कोई बीमारी आ जाए तो उसमें इस्तेमाल कर लेते हैं। गुरु हमारी कमाई को संभालकर रखता है। जिस तरह पिता अपनी कमाई हुई पूँजी स्याने बच्चे के हवाले कर देता है कि यह इसे बेकार नहीं गँवाएगा।

जो शिष्य फौलाद का हृदय बनाकर अभ्यास करता है, सिमरन करता है गुरु की याद बनाकर रखता है उसके दिल से दुनिया के ख्याल उड़ जाते हैं सिर्फ गुरु ही गुरु रह जाता है। सूफी साफ दिल वह है जहाँ नाम ही नाम हो, दुनिया का कुछ न हो। ऐसी महान आत्मा जब अभ्यास में बैठती है तो देवता भी उसे चारों तरफ से घेर लेते हैं कि ऐसा जीव मातलोक में अभ्यास पर बैठा है, भजन कर

रहा है, देवता भी उसकी जय-जयकार करते हैं। जब सतगुरु ऐसा साफ दिल देखता है तो सतगुरु अपनी बरकतें लेकर उसके अंदर बैठ जाता है। उसका हक तो देना ही था उसे हक से भी ज्यादा दे देता है।

परमात्मा की भक्ति बहुत अमोलक धन है। यह भक्ति मूल्य से नहीं मिलती, किसी जोर से नहीं मिलती और किसी खास परिवार को भी नहीं मिलती।

भक्ति भक्तन हूं बण आई।

भक्ति, भक्तों की जायदाद है। बेटा-बेटी, सेवक कोई भी भक्ति करे वह सतगुरु से भक्ति की दात प्राप्त कर लेता है। भक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की नाशक है। ये पाँचों डाकु किसी ताकत से, पढ़-पढ़ाई से समाज बदलने से बस में नहीं आते। ये नाम की कमाई से ही बस में आते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

मन मूसा पिंगल भया पी पारा हर नाम।

जिस तरह चूहे को पारा पिला दें तो वह मरता नहीं जीवित रहता है लेकिन हरकत करने से हट जाता है, हमारे मन की भी यही हालत है। सच्चे सुख की तलाश में देवी-देवता, इंसान और राजा-महाराजा भी फिरते हैं लेकिन सच्चा सुख दुनिया की हुकूमत, धन-दौलत या समाज में नहीं। सच्चा सुख, सच्ची इज्जत और सच्ची बड़ाई तो वापिस अपने घर सच्चखंड पहुँचकर ही है।

अगर कोई सच्चा प्यार करता है तो वह हमारा सतगुरु कुलमालिक परिपूर्ण परमात्मा ही है बाकी दुनिया के प्यार में गर्ज है अशातिं है। परमात्मा की सबसे बड़ी यही रीति है कि परमात्मा जिसे एक बार अपने घर में सच्ची इज्जत बख्श देता है फिर उससे छीनता नहीं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

ऐह रीति भली भगवंता।

हम दुनिया की मान-बड़ाई को जानते ही हैं कि जो आदमी मान-बड़ाई देते हैं अखबारों में जय-जयकार करते हैं फूल बरसाते हैं। जब दूसरी पार्टी का जोर पड़ जाता है हुकूमत हाथ से निकल जाती है तब वही आदमी अखबारों में मिट्टी रोलते हैं गले में जूतों के हार तक डाल देते हैं, वे कौन सी बदनामी नहीं करते? यह तो हमारा परिपूर्ण परमात्मा है जो हमें बड़ाई देकर उदास नहीं होता छीनता नहीं, पछताता भी नहीं कि मैंने इसे क्यों दी!

भक्ति सच्चे सुख, सच्ची इज्जत की दाता है लेकिन हम जब तक सन्त-सतगुरु की शरण में नहीं जाते तब तक हम इस धन को अपने-आप प्राप्त नहीं कर सकते। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

साध संग अग्न सागर तरो।

आग के समुंद्र का नाम सुनकर दुनिया काँपती है। सावन सतगुरु कहा करते थे, ''अंदर अग्नि के बड़े-बड़े खम्बे हैं अगर इस दुनिया में एक भी खम्बा आ जाए तो दुनिया उसके ताप से जल जाए। जिन आत्माओं ने यहाँ गलतियां की होती है उन मलीन आत्माओं को उन खम्बों से चिपटाया जाता है।'' जिन महापुरुषों ने ये चीजें देखी होती हैं वे बयान करते हैं।

परमात्मा के भक्त, परमात्मा के प्यारे परमात्मा से बढ़कर हैं क्योंकि उन्होंने परमात्मा को अपने प्यार की जंजीरों से बांध लिया है, अपने बस में कर लिया है। ऐसा नहीं कि परमात्मा के भक्त परमात्मा के शरीक हैं वे परमात्मा के प्यारे बच्चे होते हैं, बच्चा जो चाहे बाप से करवा सकता है। कबीर साहब कहते हैं:

मेरी बद्दी भक्त छुड़ावे।

परमात्मा कहता है, ''मेरे द्वारा बांधे हुए को भक्त छुड़वा सकता है लेकिन भक्त के द्वारा बांधे हुए को मैं नहीं छुड़वा सकता।

अगर भक्त मुझे भी बांध दे तो मैं उससे यह नहीं पूछ सकता कि मुझे किस अपराध में बांधा है?'' मातलोक में आने के कारण उसे परमात्मा ने मान-बड़ाई दी है।

साधु बोले सहज स्वभाव, साधु का बोला बिरथा न जाए।
जो बोले पूरा सतगुरु, सो परमेश्वर सुणया।
ओ ही वरतया जगत में, घट घट में रमया।।

ऐमक बोलता है तो उसकी कोई कीमत नहीं। सन्त-सतगुरु बोलते हैं तो परमात्मा सुनता है। सन्त संसार में आकर कोई करामात नहीं दिखाते, कोई खेल नहीं करते। सन्तों की सबसे बड़ी करामात यह है कि उनके किसी सेवक को चोला छोड़ते हुए देखें!

सज्जन से ही आखिए जो चलदयां नाल चलन।
जित्थे लेखा मंगिए तित्थे खड़े दसन।।

गुरु कौन है? सज्जन कौन है? जो मुश्किल के समय में काम आए। मुश्किल का समय वह है जब हम इस संसार समुंद्र से जाते हैं उस समय भाई-बहन और कोई भी हमारी मदद नहीं कर सकता। मौत का क्या पता है किस वक्त आनी है, हमारी मौत का समय किस तरह तय किया गया है? यह तो मालिक को ही पता है जिसने तय किया है लेकिन गुरु खतरनाक से खतरनाक समय में भी आकर संभालता है; यह उसका बिरद है।

दुनिया के कामों को छोड़कर एक घंटे के लिए अभ्यास में बैठें। बस! मालिक ही याद आए, बिना रुके सिमरन करें। सिमरन आत्मा की सफाई के लिए झाड़ू का काम करता है। मकान को साफ करने के लिए झाड़ू लगानी पड़ती है। हम जिस मकान में परमात्मा को बिठाना चाहते हैं उसकी सफाई की तरफ तवज्जो दें। हमें हमेशा ही सिमरन की बुहारी लगानी चाहिए। हाँ भई! बैठें।

10 Oct 1981

***

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सन्त किसे कहते है?

गुरु रामदास जी की बानी DVD-263 16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

मैं अपने गुरुदेव परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूँ। जिन्होंने इस तपते संसार में आकर हम गंदे जीवों पर दया-मेहर की। देवी-देवता भी उस झलक को लोचते रहे।

आज मैं आपके आगे गुरु रामदास जी महाराज का छोटा सा शब्द ले रहा हूँ। अलग-अलग महात्माओं की बानी लेने का यही मकसद होता है चाहे तीरंदाज कितने भी हों सबका निशान एक ही होता है। चाहे कोई सन्त-महात्मा आज पैदा हुआ है चाहे पाँच सौ साल पहले पैदा हुआ सब महात्माओं का एक ही संदेश रहा है कि परमात्मा एक है। ऐसा नहीं कि हिन्दुस्तानियों का परमात्मा और है या अमेरिकनों का परमात्मा और है।

महात्मा यह भी बताते हैं कि आज तक परमात्मा बाहर से न किसी को मिला है न मिल ही सकता है। परमात्मा जिसे भी मिला अंदर से ही मिला है और अंदर से ही मिलेगा। हमने सबसे पहले सन्त-महात्माओं के मिशन को समझना है कि सन्त-महात्माओं का संसार में आने का क्या मिशन होता है?

जिन रूहों को परमात्मा की तरफ वापिस बुलाने का हुक्म होता है उन्हें शब्द-नाम के साथ जोड़ना ही सन्त-महात्माओं का मिशन होता है। सन्त-महात्मा संसार में आकर हमें न भगवे कपड़े पहनने का उपदेश देते हैं, न जटा रखने का उपदेश देते हैं न कान फड़वाकर मुंद्रा पहनने का हुक्म देते हैं और न ही घर-बार छोड़ने के लिए कहते हैं। वे हमें प्यार से कहते हैं कि तन के ऊपर चाहे सफेद, काला, भगवा जो मर्जी लिबास पहन लें इसका आत्मा के

साथ कोई संबंध नहीं। लिबास का संबंध सिर्फ शरीर को ढ़कने से है। हम लोग सन्त लफ्ज को नहीं समझते कि **सन्त किसे कहते हैं?**

आमतौर पर जो मंगत-पिंडक घर-बार छोड़कर घूमते हैं, भगवे या और किसी किस्म के कपड़े पहनते हैं हम ऐसे ऐरे-गैरे को सन्त या साधु कह देते हैं। इस लफ्ज के अर्थ को समझने के लिए पढ़े-लिखे भी धोखा खा जाते हैं कि **सन्त किसे कहते हैं?**

प्यारेयो! इस लफ्ज को विचारें। जब पिछली बार मतगणना हुई तो हिन्दुस्तान में बावन लाख साधुओं की गिनती थी। अगर बावन लाख साधु हों तो इतने सारे समाज न बनें, संसार में अमन-शान्ति दिखाई दे। महात्माओं का एक ही उपदेश होता है। बावन लाख साधुओं में से अगर पांच-सात भी साधु निकल आएं तो भी अच्छी बात है।

साधु वह होता है जिसने मन की साधना की है जो मन को साधकर सतोगुण, रजोगुण, तमोंगुण से ऊपर चला जाता है। वह अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के सारे पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाता है, ऐसा मिले तो हम उसे साधु कहेंगे। जो शिष्य, सन्तों के बताए हुए उपदेश पर चलता है थोड़ी बहुत साध-संगत करता है और शब्द-नाम की कमाई करता है उसे हम सतसंगी कह देते हैं कि यह सत की खोज में है; यह सत के साथ जुड़ने के लिए तैयार है। सन्त नामदान के वक्त थोड़ी बहुत पूँजी दे देते हैं फिर शिष्य ने उस पूँजी को आगे बढ़ाना होता है।

शिष्य वह है जो पहली मंजिल सहँसदल कँवल पर पहुँच जाए और अंदर जाकर ज्योत के दर्शन करे। मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर उठ जाए। जब हम ज्योत प्रकट कर लेते हैं ज्योत के दर्शन करते हैं तब हम पूरे शिष्य बन जाते हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी ऐसे शिष्य की महिमा गाते हुए कहते हैं:

पूर्ण ज्योत जगे घट माहे, ते खालस नहीं निखालस जाने।

खालसा वह है जिसके अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार नहीं। जो उस स्टेज तक पहुँच गया वहाँ इन चीजों का नामोंनिशान भी नहीं होता। काम, क्रोध की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी में है। जब हम ये सारे पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं तो वहाँ न मन है और न माया का ही जोर है। वहाँ आत्मा है और आत्मा को पता लगता है कि मेरा भी कोई परमात्मा है, वहाँ जाकर सन्त बनता है।

जैसे बाहर बी.ए. एम.ए. की डिग्रियां होती हैं उसी तरह परमार्थ में भी सतसंगी, शिष्य, साध, सन्त और परम सन्त की डिग्रियां होती हैं। जब ये सारी मंजिलें तय करके पाँचवी मंजिल पर पहुँच जाते हैं तो सन्त गति प्राप्त हो जाती है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

सतपुरुष जिन जाणयां सतगुरु तिसका नाओं।
तिसके संग सिख उदरे नानक हर गुण गाओ।।

कबीर साहब कहते हैं, ''जिसका मिलाप सतपुरुष परमात्मा के साथ हो गया है। वह न खुद ही पाखंड करता है न हमें पाखंड सिखाता है।'' मैंने कल भी सतसंग में बताया था कि आमतौर हम अंधविश्वास को बहुत मानते हैं। कोई थोड़ा भी अंधविश्वास देता हो तो हम सारे उस तरफ ही दौड़ पड़ते हैं।

महाराज सावन सिंह जी अक्सर कहा करते थे अगर कोई यह कह दे कि अमेरिका में जमीनें मुफ्त मिलती हैं तो कोई भी एक-दूसरे से सलाह नहीं करेगा सब उधर जाने के लिए तैयार हो जाएंगे। अगर कोई हमें कह देता है कि वहाँ जाकर तेरी बिमारी, बेरोजगारी दूर हो जाएगी तो हम सब उस तरफ दौड़ पड़ते हैं।

कुछ साल पहले हमारे राजस्थान में भी एक मोर के पंख लगाने वाला चला था कि वह पंख लगाता है। पुराने-पुराने सतसंगी जिन्हें नाम लिए हुए तीस-तीस साल हो गए थे वे भी उस तरफ चले गए। जिसकी टाँगे नहीं थी वह भी गया, जिसकी आँखें नहीं थी वह भी गया। क्या देखा-देखी का कभी रंग चढ़ा है?

रूपाणा(पंजाब) में एक आदमी एक बोतल में सिर्फ पानी ही देता था। वह कुछ नहीं लेता था सिर्फ टिकट के दो रूपये ही लेता था। जिसने सुना वही उस तरफ दौड़ पड़ा। जिस जगह पाँच-सात लाख लोग इकट्ठे हो जाएं और टिकट दो रूपये हो तो हिसाब लगा लें कितना रूपया इकट्ठा हो गया? उसे हाथ फैलाने की क्या जरूरत है? किसी आए को खाना नहीं खिलाना, किसी को पानी नहीं पिलाना, भागते हुए आए और भागते हुए चले गए।

मैं यह कहानी कई बार सुनाया करता हूँ कि मेरे पिता जी को कम सुनाई देता था और मेरी एक बहन अंधी थी। किसी ने कहा कि आप वहाँ जाएं आपसे ज्यादा बहरे और अंधे ठीक हो गए हैं। मेरे पिता जी वहाँ गए। उन्होंने सोचा कि दूसरी बार हमें किसने यहाँ लेकर आना है? हम कह देते हैं कि कुछ-कुछ फर्क पड़ा है। पिता जी ने कहा, ''मुझे थोड़ी थप-थप सुनाई देती है।'' बहन ने कहा, ''मुझे थोड़ा-थोड़ा नजर आता है।'' उन्होंने कहा कि आप यहाँ सात बार आएं। इन्होंने सात चक्कर भी लगा लिए, बहरे को सुनाई नहीं दिया अंधे को दिखाई नहीं दिया, हमारी यह हालत है।

सन्त-महात्मा जब भी संसार में आते हैं वे हमें अंधविश्वास नहीं देते। सच्चाई तो यह है कि सन्त हमें कहते हैं, ''आप हमारे साथ चलकर सच्चाई को खुद अपनी आँखों से देखें।'' जब हम

लोग तैयार नहीं होते तो सन्त हमें संसारी मिसालें देकर समझाते हैं कि शायद ये इनसे कुछ समझ जाएं।

मैं अपनी जिंदगी का एक वाक्या बताया करता हूँ कि मैं एक प्रशाद वाले साधु के पास गया, वह बहुत अच्छा था। मैंने कुछ समय उसके पास रहकर उसकी सेवा की क्योंकि बचपन से ही मेरे अंदर सेवा भाव का बहुत जज्बा था। वह साधु मुझ पर खुश हुआ और उसने मुझसे कहा, ''मैं तुझ पर खुश हूँ। मैं तुझे साँप और शेर बनने की क्रिया सिखाऊँ।'' मैंने हँसकर कहा, ''बाबा जी! मैं आपकी सेवा इसलिए कर रहा था कि मैं इंसानी जामें से ऊपर उठूं। बुरे कर्म करने से साँप या शेर के जामें में तो मैं खुद ही चला जाऊंगा।''

कबीर साहब ने अपने एक शब्द में बताया है अगर कोई आसमान में जाकर तकिया लगाकर बैठ जाए मैं तब भी नहीं मानता अगर कोई लाखों कोस की खबर लाकर दे दे मैं फिर भी मानने के लिए तैयार नहीं, यह सब तो दुनिया को भरमाने के लिए है। अगर कोई ऐसी बात कह दे तो हम सोचते हैं कि इसमें बहुत करामात है लेकिन सन्तमत में ऐसी करामातों की कोई कीमत नहीं, यह सिर्फ पाखंड है। पाखंड करके दुनिया को खुश कर लेते हैं। चार दिन अच्छा हल्वा-मांडा खा लेते हैं, पाखंड की ही पूजा है। ऐसे आदमी नर्क में जाएंगे, बार-बार चौरासी में जाएंगे।

राम झरोखे बैठके सबका झारा ले।
जाँकी जैसी चाकरी ताँको तैसा दे।।

जिस परमात्मा ने हमें पैदा किया है वह बेखबर नहीं, वह हमारे साँस-साँस का हिसाब रखता है। परमात्मा सबके अंदर बैठकर देख रहा है कि यह कितना भला मानस है, कितना महात्मा है या कितना बुरा है? परमात्मा को किसी गवाही की जरूरत नहीं।

कबीर साहब कहते हैं मुक्ति 'शब्द-नाम' में है। सारे ही सन्तों ने 'शब्द-नाम' की महिमा गाई है। हमने कभी ठंडे दिल से सोचा कि शब्द-नाम क्या चीज है, यह कहाँ से मिलता है, इसकी क्या शक्ल है और इसका क्या रंग-रूप है? गुरु साहब कहते हैं:

सच्चे शब्द सच्ची पत होई, बिन शब्दे मुक्ति न पावे कोई।
बिन सतगुरु कोई नाम न पाए, प्रभ ऐसी बणत बनाई है।।

यह तरीका किसी भी सन्त कबीर साहब, मौहम्मद साहब, क्राईस्ट या दसों गुरुओं का बनाया हुआ नहीं। परमात्मा ने अपने मिलने का कुदरती तरीका रखा हुआ है। गुरु नानकदेव जी कहते है:

बिन सतगुरु किने न पाया सब सुणयों लोक सवाया।

नाम कण-कण में व्यापक है। यह नाम आँखों से देखा नहीं जाता, कानों से सुना नहीं जाता और जुबान इसे बयान नहीं कर सकती। यह रूहानी चढ़ाई है हमारे हाथ-पैर वहाँ नहीं जाते। यह बिना लिखा कानून, बिना बोली भाषा है। पल्टू साहब कहते हैं:

जे कोई चाहे नाम तो नाम अनाम है।
पढ़न लिखन में नाहे नेह अक्षर काम है।
रूप कहो अनुरूप पवन अनिरेख ते।
हां रे पल्टू गैब दृष्टि नाम सन्त वो पेखते।।

सन्तों का अनुभव खुला होता है, वे नाम रूप हुए होते हैं। वे सोते-जागते नाम से जुड़े होते हैं।

सन्त स्नेही नाम है नाम स्नेही सन्त।

सन्त नाम में से आते हैं, नाम का ही प्रचार करते हैं। हमने सन्तों के पास जाकर क्या सीखना और क्या समझना है? सबसे पहले सन्त हमें संगत की महिमा बताते हैं कि संगत किसे कहते हैं? किसी जागते पुरुष का संग करने को संगत कहा जाता है। हम

कहते हैं कि हम सब जागते हैं लेकिन अभी हम परमात्मा की तरफ से सोए हुए हैं और दुनिया की तरफ से जाग रहे हैं।

सन्त कहते हैं कि हमने जागते पुरुष का ही सतसंग करना है। सन्त दुनिया की तरफ से सो जाते हैं परमात्मा की तरफ जाग पड़ते हैं। जैसे हम जलते हुए दीपक के पास दीपक रख देते हैं वह अपने प्रकाश में ही उसे समा लेता है। इसलिए जागते पुरुष की संगत को ही सतसंग कहा गया है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नानक गुरु न चेती मन अपने सचेत।
छुट्टे तिल ग्वाड़ ज्यों सुन्ने अंदर खेत।।

नाम मिला नहीं, नाम का पता नहीं सतसंग का ज्ञान नहीं ये अपने मन में ही सचेत हुए फिरते हैं। जब तक हमें यह पता न लगे कि सतसंग किसे कहते हैं तब तक हम फायदा नहीं उठा सकते। सबसे पहले यह सोचना है कि हम महात्मा के पास क्यों जाते हैं? वहाँ क्या बोलना है, क्या समझना है? बहुत सारे लोगों को तो यह भी पता नहीं कि हमने वहाँ क्या बोलना है? सन्त-महात्मा हमेशा ही हमें प्यार से समझाते हैं कि आपको जिस परमात्मा की खोज है वह परमात्मा आपके अंदर है।

मन महीन कर लीजिए जद ज्यों लागे हाथ।

सन्त हमें नम्रता और प्यार सिखाते हैं क्योंकि परमात्मा का रूप ही प्यार है। जब तक हमारे अंदर नम्रता नहीं आती तब तक हम कभी भी अंदर दाखिल नहीं हो सकते। बातें करने से नम्रता नहीं आती। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''वह नम्रता भी धोखा है जो हम बाहर से लोगों को झुककर दिखाएं हाथ जोड़ते रहें लेकिन अंदर से कुछ और हों।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सीस नवाए क्या थिया जे हृदय कसूदा जाए।

आप रामायण में काग भसुंड की कथा पढ़कर देखें! काग भसुंड ने अपनी पिछली कहानी में बताया है कि एक जन्म में मेरे ऊपर गरीबी आई। मैं उज्जैन गया, वहाँ मुझे अन्न-पानी मिला। मुझे गुरु की जरूरत महसूस हुई मैं गुरु के पास गया। गुरु में इतने इल्म नहीं थे वह शिव की पूजा कर रहा था और मेरे दिल में ब्राह्मण होने का अहंकार था।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं जिस तरह हम सन्त लफ्ज को नहीं समझते उसी तरह ब्राह्मण लफ्ज को भी नहीं समझते। जो ब्रह्म, पारब्रह्म को पार करके आगे जाए अपनी आत्मा से सारे पर्दे उतार दे वही ब्राह्मण है। ऐसा ब्राह्मण मिले तो हम नमस्कार करते हैं। महाराज जी कहा करते थे कि पहले ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण नहीं होता था, जो पारब्रह्म पहुँचा होता था वही ब्राह्मण कहलाता था, लोग उस ब्राह्मण से जाकर उपदेश लिया करते थे। अब हम करनी तो करते नहीं लेकिन ब्राह्मण होने का अहंकार जरूर होता है। जैसे साधगति को न पहुँचे और साध होने का अहंकार हो।

काग भसुंड ने कहा कि मेरे अंदर अहंकार था कि ये गुरु क्या जानता है? गुरु आ रहे थे लेकिन मैंने उठकर उन्हें दंडवत वंदना नहीं की। इसमें गुरु का तो कुछ बिगड़ता नहीं क्योंकि सन्त तो हर एक के सामने खुद ही झुक जाते हैं लेकिन शिष्य का इसमें अहंकार होता है। तुलसीदास ने यह भी कहा है:

गुर निंदक नारायण होई ताँका मुँह न देखो कोई।

अगर कोई महात्मा की निंदा करता है तो आप उसके नजदीक न जाएं। यह परमात्मा का ही कानून है, पापी की निन्दा करनी भी

बुरी है अगर महात्मा की निंदा करेंगे तो हमारे लिए कहाँ छुटकारा है? जब काग भसुंड ने निंदा की और उसे नर्क में डालने लगे तब गुरु मदद के लिए आया क्योंकि जिसने नाम दिया होता है वह जरूर मदद करता है। जब काग भसुंड को कौए की योनि देने लगे तो गुरु की चीख निकल गई। गुरु ने धर्मराज से कहा, ''मैं कोशिश में लगा हुआ हूँ, मैं इसे बनाऊँगा तू थोड़ा सा ठहर जा।'' फिर भी धर्मराज ने काग भसुंड को उस योनि में भेज ही दिया।

महाराज जी कहा करते थे, ''अगर हमें यह पता लग जाए कि सन्तों के दिल में हमारे लिए कितना दर्द है? तो हम उनके कहे अनुसार चलें।''

जब हम महात्मा के पास इतनी भीड़ देखते हैं तो सोचते हैं पता नहीं महात्मा को कितना चढ़ावा चढ़ता है? यह वहम ही होता है। आप महात्मा के नजदीक खड़े होकर देख लें कि उनके पास कितना चढ़ावा आता है। सन्तों के तो लंगर मुश्किल से चलते हैं।

बाबा बिशनदास जी एक कहानी सुनाया करते थे कि कुछ चोर एक महात्मा के यहाँ चोरी करने गए कि यहाँ से कुछ न कुछ मिलेगा। महात्मा के पास एक कंबल ही था। महात्मा ने चोर देखे तो महात्मा बहुत उदास हुए कि मेरे घर में मेहमान आए हैं और मेरे घर में कोई खास वस्तु नहीं जो मैं इन्हें पेश कर सकूँ, रात को कौन किसके घर आता है।

चोर इधर-उधर देखने लगे तब महात्मा ने कहा, ''आप इतने परेशान क्यों होते हैं मेरे पास यह एक कंबल ही है आप इसे ले जाएं।'' जब चोरों ने कंबल उतारकर देखा कि महात्मा ने उस कंबल से ही अपने आपको चारो तरफ से ढ़का हुआ था और कोई

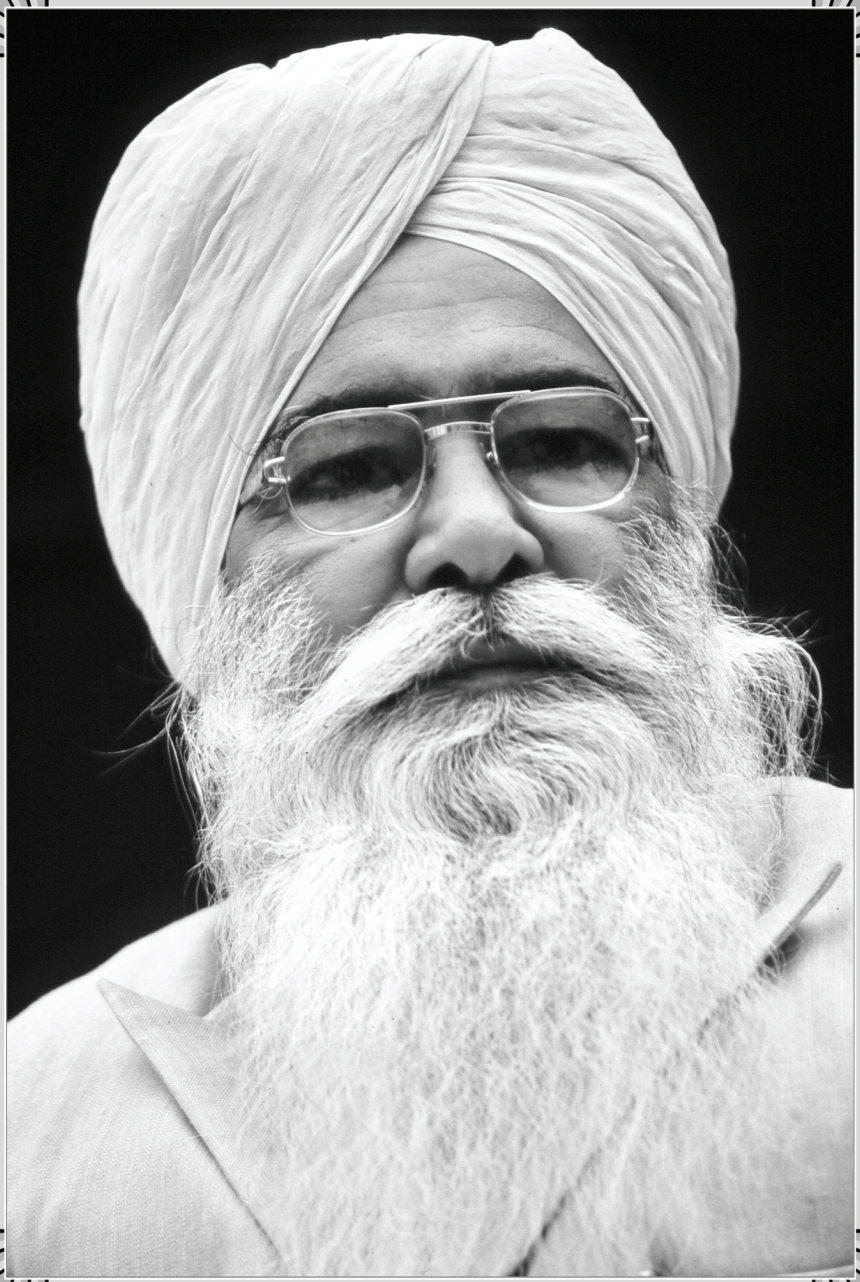

वस्त्र नहीं पहन रखा था। चोरों का दिल उदास हुआ कि हम यह कंबल क्यों लेकर जा रहे हैं। महात्मा ने कहा, ''आप मेरे घर से खाली हाथ न जाएं, मैं तो आपकी दिहाड़ी भी नहीं दे सका।'' महात्मा ने विनती करके चोरो को वह कंबल देकर कहा कि आप मुझे धन्यवाद देकर जाएं फिर कभी आना हो तो मुझे पहले संदेश भेज देना मेरे पास जो कुछ भी होगा मैं आपके लिए तैयार रखूंगा।

कुछ दिन बाद चोर पकड़े गए उनके पास जो सामान था वह भी पकड़ा गया। महात्मा को लोगों ने देखा होता है बहुत से लोग महात्मा को जानते थे। पुलिस वालों ने पहचान लिया कि यह कंबल महात्मा का है। पुलिस ने चोरो से कहा अगर महात्मा यह कंबल पहचान ले तो हम तुम्हें छोड़ देंगे और किसी गवाही की जरूरत नहीं। जब महात्मा से पूछा गया कि महात्मा जी! ये आपका कंबल चोरी करके ले गए थे? महात्मा ने कहा, ''ये चोर नहीं ये तो बहुत शरीफ आदमी हैं। ये रात को मेरे पास आए मेरे पास कुछ नहीं था ये कंबल चोरी करके नहीं ले गए ये तो मुझे धन्यवाद देकर गए हैं।'' महात्मा की बात पर पुलिस ने उन चोरों को छोड़ दिया।

महात्मा ने सारी जिंदगी उस कंबल को ओढ़कर भजन-सिमरन किया था, मालिक का ध्यान किया था। जो उस कंबल को ओढ़ेगा क्या वह **साधु नहीं बनेगा?** चोरो ने जब कंबल ओढ़ा तो उनका ख्याल पलट गया। चोरों ने महात्मा के पास आकर घुटने टेक दिए कि हम आगे के लिए कानों को हाथ लगाते हैं, आप हमें नाम दें। महात्मा संसार में नम्रता लेकर आते हैं। परमात्मा ने उन्हें अपनी दया का श्रृंगार दिया होता है। इसी लफ्ज को लेकर आप गुरु रामदास की बानी गौर से सुनें:

राम गुर पारस परस करीजै।

हम सुनते हैं कि एक पत्थर पारस है जिसमें यह गुण है अगर उसे लोहे से लगा दें तो वह लोहे को सोना बना देता है। पारस और सन्त में बहुत फर्क होता है। पारस अपने जैसा पारस नहीं बना सकता लेकिन सन्त नाम देकर अपने जैसा सन्त बना लेते हैं।

पारस में और सन्त में बड़ा अंतरों जान।
वो लोहा कंचन करे वो कर ले आप समान।
नानक गुरु ते गुरु भए, देखो तिसकी रजाए।।

परमात्मा की मौज देखें कि हम गुरु से मिलकर गुरु ही बन गए हैं। पारस पत्थर भी मिट्टी है और सोना भी मिट्टी है। सन्त असल पारस किसे कहते हैं? राम परमात्मा पारस है और दूसरा गुरु जो हमें राम परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए आता है।

हम निरगुणी मनूर अति फीके मिल सतगुर पारस कीजै।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''लोहे की मैल को मनूर कहते हैं। हम तो मनूर थे लोहा भी नहीं थे जिसे वह पारस लगाकर सोना कर देता। गुरु पारस मिला उसने हमें निर्मल कर दिया इसमें गुरु की ही बड़ाई है।'' गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

मत कोई भ्रम भूले संसार गुरु बिन कोई न उतरस पार।

दुनिया भ्रम में फिर रही है, सन्तों के बगैर रास्ता नहीं मिलता। हम इस दस दरवाजों की देह में किस रास्ते से दाखिल हों? हमारे शरीर के नौं दरवाजे बाहर संसार की तरफ खुलते हैं और दसवां गुप्त दरवाजा अंदर की तरफ खुलता है। दो आँखें, दो कान, नाक के दो सुराख, मुँह, नीचे दो सुराख है, इनके रास्ते बाहर की तरफ खुलते हैं लेकिन परमात्मा के घर का दसवां गुप्त दरवाजा अंदर की तरफ खुलता है। क्राईस्ट ने कहा है, ''परमात्मा की बादशाहत आप सबके अंदर है।'' गुरु रामदास जी कहते हैंः

सब कुछ घर में कछु बाहर नाहीं, बाहर टोले सो भ्रम भुलाही।

आपको जिस परमात्मा की खोज है वह आपके अंदर है। जो उसे बाहर नदियों, धर्मग्रंथों, मंदिरों और मूर्तों में ढूंढते हैं वे बाहर भ्रम में ही रह जाते हैं। परमात्मा अंदर है जहाँ परमात्मा रहता है अगर हम वहाँ न जाएं तो हम उससे किस तरह मिल सकते हैं? अगर हमारी कोई चीज सतसंग में खो गई है लेकिन हम उसकी तलाश थोड़ी दूर जाकर करें तो हमारी मेहनत बेकार जाएगी। हमारी चीज जहाँ खो गई है अगर हम उसे वहीं ढूंढे आज नहीं तो कल हम अपनी खोज में कामयाब हो जाएंगे। आप कहते हैंः

ज्यों तिल माही तेल है ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझमें जाग सके तो जाग।।

आप कहते हैं, ''पत्थर के अंदर अग्नि है, फूल के अंदर खुशबू है, शीशे के अंदर रोशनी है और तिल के अंदर तेल है लेकिन उसे युक्ति से निकाला जाता है। इसी तरह हमारा प्यारा प्रीतम परमात्मा हमारे अंदर है। हम तो लोहे की मैल जैसे थे। गुरु अमरदेव जी महाराज की कृपा हुई वह पारस हमारे साथ छुवाया और हम भी उनका रूप बन गए।''

सुरग मुकत बैकुंठ सभ बांछेंह् नित आसा आस करीजै।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''भूखा खाने के लिए ही फरियाद करता है। उसे कोई और चीज पेश करो तो वह सबसे पहले यही कहता है कि मुझे रोटी खिलाओ।'' जिन आत्माओं के अंदर परमात्मा की तड़प है वे परमात्मा के प्यारों के पास जाकर दुनिया की चीजें नहीं मांगते। कबीर साहब कहते हैंः

गुरु सबको चाहे गुरु को चाहे न कोए।

महात्मा चाहते हैं कि हम किसी न किसी तरह इन्हें इस दुखी संसार से ले चलें लेकिन हम बार-बार इसमें फँसना चाहते हैं।

कोई आए तो बेटा माँगे यही गौसाईं दीजे जी।

मैंने देखा है आमतौर पर हम लोग ऐसी ही ख्वाहिशें लेकर सतसंग में आते हैं। मेरे पास एक लड़की आती थी, उसकी शादी हुए कई साल हो गए थे। वह पाँच-सात सतसंगों में आई एक दिन उसने मेरे आगे अपनी ख्वाहिश जाहिर की कि मेरी शादी हुए दस-ग्यारह साल हो गए हैं लेकिन कोई बच्चा नहीं हुआ। मैं चुप रहा। उसने मेरी चुप को अपनी श्रद्धा समझा।

वह दो-चार बार फिर आई। आखिर उसके पेट में आत्मा ने प्रवेश कर लिया वह फिर मुझसे मिली और उसने कहा कहीं लड़की न हो जाए लड़का हो। खैर भगवान कृपाल का दरबार था उसके घर लड़का हो गया। जब लड़का हुआ तो उसने मुझे अपनी परेशानी दिखाई कि मैं बहुत दुखी हूँ। वह सामने ही बैठी है। अब आप ही बताएं मैं उसे क्या कहूँ?

जब मैं पहले टूर पर गया किसी प्रेमी के घर लड़की हुई उन्होंने मुझे फोन किया कि परमात्मा की दया से हमारे घर लड़की हुई है। मैं हिन्दुस्तान के ख्यालों में था। मैं बहुत मुश्किल में था कि मैं क्या कहूँ? मैंने प्रिसिंपल कैंट से पूछा कि मैं इस बारे में आपके अमेरिकनों से क्या कहूँ? कैंट ने कहा कि यहाँ हिन्दुस्तान वाला काम नहीं कि लड़की हो तो पड़ोसी भी रोएं, आप बधाई दे दें। उसके बाद मैं बाहर काफी टूर करता रहा हूँ।

इसी तरह मैं अमेरिका गया तब बलवंत भी मेरे साथ थी। वहाँ एक परिवार के लोग मुझे हवाई जहाज में बिठाकर अपने घर ले गए। वह मेरी जिंदगी की काफी लंबी उड़ान थी। जब उनके घर गए

तो मियाँ-बीवी ने मेरे गले से लगकर कहा, ''या इतना धन न देते अगर दिया है तो कोई लड़का बाला भी हो।'' कुछ समय बाद उनके घर लड़का हो गया। उनका बार-बार यही संदेश आता कि यह बहुत रोता है। मैंने कहा कि मैं शरीर करके दूर हूँ नहीं तो मैं आपके बच्चे को खिलाया करूं। आप सोचकर देखें! हम जो चीजें मांगते हैं उन्हें पाकर कौन सा खुश होते हैं? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

बिन तुध होर जे मंगणा सिर दुखां दे दुख।
दे नाम संतोखिया उतरे मन की भुख।।

हम भोले जीवों को यह भी पता नहीं कि लड़के में सुख है या लड़की में सुख है, कौन सुख देगा? जिंदगी क्षण भंगुर है पता नहीं किस समय श्वांस खत्म हो जाने हैं, मौत ने कब गला दबा देना है? परमात्मा ने इंसान का जामा अपनी भक्ति के लिए अपने मिलाप के लिए दिया है लेकिन हम परमात्मा को भूल गए हैं।

दात प्यारी विसरया दातारा।

परमात्मा ने हमें दस दिन खेलने के लिए चीजें दी हैं। उन्हें प्राप्त करके हम दाता को भूल गए। हम जीवों को यह पता नहीं कि सतसंग में कैसे जाना है? सन्त कुछ और चाहते हैं, हम कहते हैंः

कोई आए तो बेटा माँगे यही गौसाई दीजे जी।
कोई आए तो दुख का मारया हम पर कृपा कीजे जी।
कोई आए तो ब्याह सगाई सन्त गौसाईं रीझे जी।
सच्चे का कोई ग्राहक नाहीं झूठे जगत पतीजे जी।
कहत कबीर सुनों भई साधो अंधे को क्या कीजे जी।।

हर दरसन के जन मुकत न मांगेंह् मिल दरसन तृपत मन धीजै।।

अब आप मालिक के प्यारों के बारे में बताते हैं कि वे जब गुरु के चरणो में, सतसंग में पहुँचते हैं तो अपने दिल-दिमाग को

बिल्कुल खाली कर देते हैं। मैं अपनी जिंदगी का रिकार्ड बताया करता हूँ कि मैंने अपने गुरु के ऊपर कोई सवाल नहीं थोपा था। बस! मैंने यही कहा था, ''मेरा दिल-दिमाग खाली है।'' आपने कहा, ''मैं खाली दिल-दिमाग देखकर ही तेरे पास 500 किलोमीटर चलकर आया हूँ, दिमागी पहलवान मेरे पास बहुत हैं।''

हम कर्मकांड या दान-पुण्य इसलिए करते हैं कि हमें स्वर्ग मिल जाएं। सन्त कहते हैं कि ऐसा नहीं कि दान-पुण्य का कुछ नहीं मिलता। हाथ से झाड़ू निकल जाएगा हुकूमत मिल जाएगी। झोपड़ी से बिस्तर उठाकर महल में लगा लेंगे लेकिन रहेंगे तो फिर भी जेलखाने में ही, तन-मन के पिंजरे में कैद हैं। कभी बिमारी से परेशान हैं कभी बेरोजगारी से परेशान हैं।

स्वर्गों में भोग योनियां हैं। जिन्हें हम देवता कहते हैं उन्होंने मनुष्य का जामा पाकर अच्छे कर्मकांड, जप-तप, दान-पुण्य किए वे उसका लाभ भोग रहे हैं जब पुण्य खत्म हो जाएंगे वे फिर संसार में आ जाएंगे। स्वर्गों से आकर सीधा इंसान के जामें में जाता है। नर्कों से निकलकर कीड़ों की योनि में जाता है। अगर नाम नहीं लिया फिर इंसान का जामा खो दिया। लोग एक रूपया दान करके हजार की आशा लगाते हैं।

माया मोह सबल है भारी मोह कालख दाग लगीजै।।

अब गुरु साहब प्यार से कहते हैं कि चाहे कोई कितना भी सुंदर क्यों न बन जाए लेकिन काजल की कोठरी में दाग लगे बिना नहीं रह सकता। कबीर साहब ने इस संसार को काजल की कोठरी कहा है। आप कहते हैं मैं उस पर बलिहार जाता हूँ जो काजल की कोठरी में जाकर बेदाग बाहर निकल जाए। किसी को शराब का

दाग है, किसी को हौमें का दाग है और किसी को दुनिया की मान-बड़ाई का दाग है। हम सब लोग दागी हैं। वही बहादुर है जो दाग लगे बिना यहाँ से निकल जाए।

मेरे ठाकुर के जन अलिपत हैं मुकते ज्यों मुरगाई पंक न भीजे।।

अब गुरु साहब बहुत सुंदर मिसाल देकर बताते है कि मालिक के प्यारे संसार में इस तरह रहते हैं जिस तरह मुरगाबी पानी के अंदर रहती है, खाती है पीती है लेकिन खुष्क परों से उड़ जाती है। उसी तरह सन्त-महात्मा भी काजल की कोठरी में आते हैं लेकिन वे दुनिया के दागों से बचकर चले जाते हैं।

महाराज जी मिसाल दिया करते थे, ''जिस तरह मक्खी शहद की थाली में बैठ जाती है, स्यानी मक्खी शहद खा लेती है उड़ भी जाती है। दूसरी मक्खी शहद के बीच में आकर बैठ जाती है उसकी लात और पर शहद में फँस जाते हैं वह न तो शहद ही खा पाती है न उड़ ही सकती है।'' इसी तरह हम दुनियादार दुनिया की लज्जतें नहीं ले सकते, दुनिया में ही तड़प-तड़पकर मर जाते हैं।

सन्त कहते हैं कि सब बिमारियों की दवाई नाम है। नाम जपेंगे तो आपके मन को शान्ति आएगी। आत्मा की खुराक ही नाम है। हम लोग तड़पते रहते हैं दुखी भी बहुत हैं लेकिन फिर भी परमात्मा का नाम लेने के लिए तैयार नहीं।

चंदन वास भुयंगम वेड़ी किव मिलिऐ चंदन लीजै।

आप कहते हैं कि चंदन एक ठंडी लकड़ी है। साँप जहर की वजह से बहुत तपता है। साँप अपने जहर की तपिश को कम करने के लिए चंदन के साथ जाकर लिपटता है। जिसने चंदन लेना है वह

सबसे पहले साँपों को काटे तभी आसानी से चंदन ले सकता है। इसी तरह वह परमात्मा रूपी नाम हमारे अंदर है लेकिन हमारा मन रूपी साँप इसका रखवाला बैठा है।

अगर हम इस मन रूपी सांप को पकड़ें तभी हम इस नाम रूपी हीरे को प्राप्त कर सकते हैं लेकिन हम इस साँप को पकड़ने के लिए घर-बार छोड़ते हैं, बेटा-बेटी छोड़ते हैं या सफेद कपड़े उतारकर भगवे कपड़े पहन लेते हैं या कान फड़वा लेते हैं और अपने घर की बनी हुई रोटी खानी छोड़ देते हैं बाहर जाकर अनेकों के आगे हाथ फैलाते हैं। अपनी थोड़ी बहुत जायदाद छोड़ देते हैं आगे डेरों में जाकर गद्दियों के लिए झगड़ते हैं। दिन-रात एक दूसरे का बुरा सोचते हैं। गुरु नानक साहब कहते हैंः

घर छोड़ परदेस धाया, पंज चंडाल नाले ले आया।

घर को छोड़कर परदेस आ गया लेकिन काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार भी साथ है, क्या छोड़ा? गुरु साहब कहते हैंः

त्यागना त्यागना काम क्रोध लोभ मोह अहंकार त्यागना।

ये पाँचों चीजें आप गृहस्थ में रहकर त्याग सकते हैं। एक त्यागी है वह बाजार में जाता है उसका मिठाई खाने का दिल करता है लेकिन उसके पास पैसे नहीं। वह चोरी करेगा, पाखंड करेगा या किसी को ठगेगा। दूसरी तरफ एक गृहस्थी है वह अपने दसों नाखूनों की कमाई करता है वह उस कमाई के पैसे से मिठाई खरीदकर खा लेगा। हमें पता नहीं कि हमने किस चीज को त्यागना है? इसलिए सन्त ज्यादा से ज्यादा गृहस्थ में ही होते हैं। हम मन रूपी साँप को कभी भी हठकर्मों से नहीं पकड़ सकते।

महाराज जी कहा करते थे जिस तरह अग्नि जलती है हम उसके ऊपर राख डाल देते हैं तो वह राख उतनी देर ही दबी रहेगी

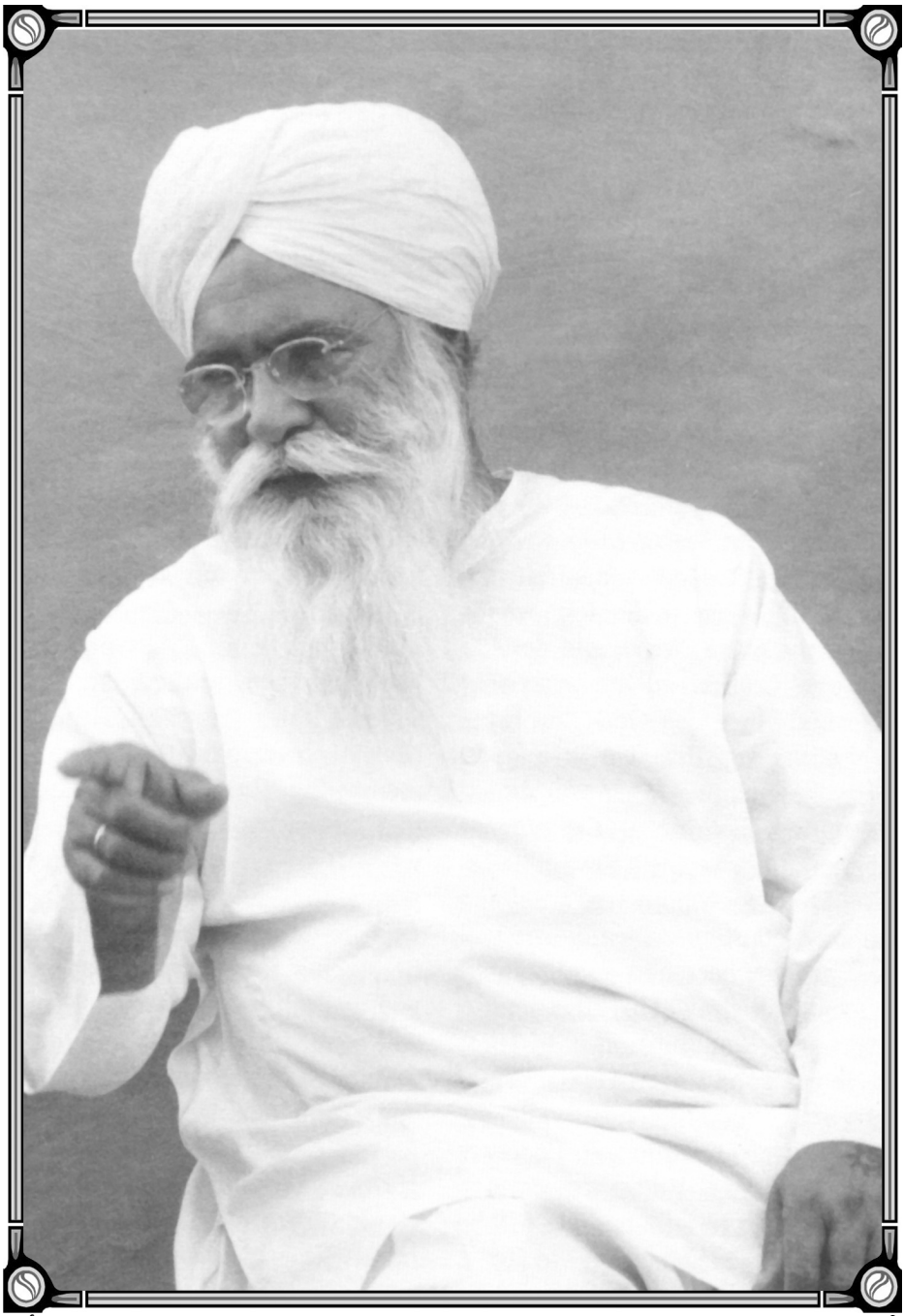

जब तक आँधी नहीं आती। जब आँधी आएगी राख उड़ जाएगी नीचे से सुलगती हुई आग भड़क उठेगी। इसी तरह जब हम हठकर्मों के जरिए डिसिप्लेन में लाकर थोड़ा बहुत पढ़-पढ़ाकर मन के ऊपर हावी होते हैं तब हम सोचते हैं कि अब हमारा मन काबू में आ गया है लेकिन जब फिर भोगों और मान-बड़ाई की आँधी चलती है तब हमारा मन वही हरकतें करने लग जाता है जैसे पहले करता था।

काढ़ खड़ग गुर ग्यान करारा बिख छेद छेद रस पीजै।
आन आन समधा बहु कीनी पल बैसतंर भसम करीजै।
महां उग्र पाप साकत नर कीने मिल साधु लूकी दीजै।।

आप कहते हैं जिस तरह लकड़ी का बहुत बड़ा ढ़ेर है अगर अग्नि की एक चिंगारी डाल दें तो सब राख हो जाता है। बेशक हमारे कितने ही बुरे कर्म क्यों न हों जब हम किसी सच्चे महात्मा की संगत में जाते हैं तो सब पाप खत्म हो जाते हैं। रामानंद जी ने कहा थाः

गुरु का शब्द काटे कोट कर्म।

सहजो बाई अपनी बानी में कहती हैंः

पहले बुरा कमाएके बांधी बिख की पोट।
कोट कर्म छिन में कटे जब आए गुरु ओट।।

सन्त हमें प्यार से बताते हैं कि पहले जो कुछ कर लिया अब तौबा कर ले। आगे से नाम की कमाई करें और अपने जीवन को

जिस तरह लकड़ी का बहुत बड़ा ढ़ेर है अगर अग्नि की एक चिंगारी डाल दें तो सब राख हो जाता है। बेशक हमारे कितने ही बुरे कर्म क्यों न हों जब हम किसी सच्चे महात्मा की संगत में जाते हैं तो सब पाप खत्म हो जाते हैं।

पवित्र बनाएं। कोई ऐसा नजर नहीं आता जिसके ऊपर संगत का असर न हो। संगत में आएंगे तो एक संगत में नहीं तो दूसरी संगत में रंग चढ़ना शुरू हो जाएगा। पता नहीं महात्मा के किस लफ्ज ने हमारी जिंदगी को पलट देना है! जिस तरह आग की एक चिंगारी लकड़ी के ढ़ेर को जला देती है उसी तरह नाम चिंगारी का काम करता है। कबीर साहब कहते हैं:

जब ही नाम हृदय धरयो भयो पाप का नाश।

साधु साध साध जन नीके जिन अंतर नाम धरीजै।।
परसन परस भए साधु जन जन हर भगवान दिखीजै।।

गुरु रामदास जी कहते हैं **सन्त किसे कहते हैं?** जिसने मन की साधना कर ली। जो साधना करके पारब्रह्म में पहुँच गया अपनी आत्मा से सारे पर्दे उतार लिए हैं। गुरु साहब कहते हैं:

चरन साध के धोए धोए पिओ, अरप साध को अपना जिओ।
साध की धूड़ करे स्नान, साध ऊपर जाईऐ कुर्बान।।

ऐसा साधु मिले तो उनकी सोहबत-संगत का हमारे ऊपर असर हो जाता है, हम भी अच्छे इंसान बन जाते हैं। ऐसे महात्मा की संगत में बैठना परमात्मा की संगत में बैठना है।

साकत सूत बहु गुरझी भरया क्यों कर तान तनीजै।
तंत सूत किछ निकसै नाहीं साकत संग न कीजे।।

पहले आप साधुओं की महिमा कर आए हैं। अब आप साकत पुरुषों की हालत बताते हैं बेशक आप कितनी भी कोशिश कर लें उलझे हुए सूत में से ताना नहीं बुना जा सकता। जिन साकतों का मन निन्दा, चुगली, शराबों-कबाबो से भरा हुआ है आप उनकी

सोहबत में न बैठें। माँ के पेट से न कोई सन्त बनकर आता है न कोई चोर या ठग बनकर आता है। कबीर साहब कहते हैं:

जो जैसी संगत करे सो तैसो फल खाए।

यहाँ आकर संगत का असर होता है अगर माँ-बाप अच्छे हैं तो औलाद के ऊपर अपने आप ही असर होगा। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिसने अपनी औलाद को नेक बनाना है वे खुद नेक बनें। जो ये सोचते हैं कि हम न शराब छोड़ें, न मीट छोड़ें न कोई बुरा कर्म छोड़ें लेकिन हमारी औलाद नेक बनें वे भूल में हैं।''

गुरु रामदास जी कहते हैं कि ऐसे पुरुषों की संगत में भूलकर भी न जाएं। जैसे उलझे हुए सूत से ताना नहीं बुना जा सकता उसी तरह ऐसे साकतों का मन गुंजलों से भरा होता है।

सतगुर साध संगत है नीकी मिल संगत राम रवीजै।।
अंतर रतन जवेहर माणक गुर किरपा ते लीजै।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''हमारे अंदर नाम-रूपी रतन है लेकिन जब तक हम किसी महात्मा की सोहबत में नहीं जाते तब तक हम उस नाम-रूपी रतन को प्राप्त नहीं कर सकते।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

जिस वक्खर को लैण तू आया राम नाम सन्तन घर पाया।

मेरा ठाकुर वडा वडा है सुआमी हम क्योंकर मिलेंह् मिलीजै।।
नानक मेल मिलाए गुर पूरा जन कौ पूरन दीजै।।

अब गुरु रामदास जी कहते हैं, ''मेरा परमात्मा सच्चखंड में बैठा है। वह सब ताकतों से ऊँचा है सारी दुनिया उसके हुक्म से ही चल रही है, वह कण-कण में व्यापक है। हमारे दिल में बहुत तड़प

है कि हम उससे कैसे मिलें? कोई पूरा महात्मा मिल जाए जो हमें उसके साथ जोड़ दे क्योंकि परमात्मा शब्द रूप, नाद रूप होकर हमारे अंदर विराजमान है। कोई महात्मा ही शब्द-नाम के साथ जोड़ सकता है। जिसे मुसलमान फकीर कलमा कहते हैं और गुरु नानकदेव जी उसे रब्बी बानी, धुर की बानी कहते हैं। हम पढ़ते हैं:

अंतर जोत निरंतर बानी सच्चे साहेब स्यों लिव लाई।

जब आप फैले हुए ख्याल को महात्मा के दिए हुए सिमरन के जरिए आँखों के पीछे लाएंगे तो सच्चखंड से जो आवाज उठ रही है वह आपके अंदर धुनकारें दे रही है, यहाँ सबसे पहले ज्योत के दर्शन होंगे। कबीर साहब कहते हैं:

दीवा बले अगम का बिन बत्ती बिन तेल।

इस ज्योत को बत्ती और तेल की जरूरत नहीं और न यह हवा से बुझती है। हम बानी पढ़ लेते हैं लेकिन उसे विचारते नहीं कि महात्मा ने यह बानी किस लिए लिखी है? यह तो महात्मा ने हम पर बहुत कृपा की। उन्होंने कमाईयां की, मेहनतें की, पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड पर चढ़े। उन्होंने अपने अंदर जो नजारे देखें अंदर जो घाटियां आईं उनका जिक्र कर दिया। यह भी बताया कि नाम हमारे अपने बस का खेल नहीं, संगत में जाना हमारे अपने बस का खेल नहीं। गुरु नानकदेव जी का वाक है:

नानक सतगुरु तिन्हां मिलाया जिन धुरों पया संजोग ।

आप फिर कहते हैं:

भागहीन गुरु न मिले निकट बैठयां नित पास।।

चाहे महात्मा आपके घर में भी क्यों न पैदा हो जाए आपको ऐतबार ही नहीं आएगा।

वडभागी गुरु संगत पावे भागहीन भ्रम चोटां खावे।।

दुनिया पलट जाए लेकिन गुरु नानकदेव जी का वाक नहीं पलटेगा। भाग्यशाली जीव ही संगत में आ सकते हैं, भ्रम के मारे जीव इधर-उधर ही भटकते रहेंगे।

गुरु साहब ने इस छोटे से शब्द में बहुत नम्रता जाहिर की है कि हम तो लोहे की मैल जैसे थे। गुरु मिला उसने नाम रूपी पारस हमारे साथ छुवाया तो हम भी पारस बन गए। दुनियादार दुनिया के कीड़े दुनिया ही मांगते हैं। हमें साकतों की संगत से बचना चाहिए और मालिक के प्यारों की संगत-सोहबत से फायदा उठाना चाहिए।

आप गृहस्थ की जिम्मेवारियां निभाते हुए शब्द-नाम की कमाई करें। सतसंग में आकर हमें हमारी गलतियों का पता लगता है जिसे पता लगता है वह अपना सुधार भी करेगा। हमें भी चाहिए कि गुरु रामदास जी के कहे मुताबिक अपने जीवन में शब्द-नाम की कमाई करके इसे सफल बना लें। ***

6 मार्च 1994

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

अहंकार

अनिक तपसिआ करे अहंकार।।
नरक सुरग फिरि फिरि अवतार।।

अगर कोई **अहंकार** में आकर तपस्या-अभ्यास करता है तो वह बेचारा नर्कों-स्वर्गों में ही चक्कर लगाता रहता है।

किया कराया सब गया जब आया अहंकार।

हमारे राजस्थान की एक मशहूर कहानी है। आज से 50-60 साल पहले पानी की कमी की वजह से अन्न की भी कमी थी। अब गंगानगर में नहर आने से दुनिया सुख भोग रही है। चार साधुओं ने एक माता के घर जाकर कहा, ''माता! हमें बहुत भूख लगी है।'' माता ने उन साधुओं को खाना खिलाकर तृप्त किया।

उन साधुओं की पहुँच स्वर्गों तक थी। साधुओं ने खुश होकर माता से कहा, ''माता! तुझे स्वर्गों में छोड़ आएं?'' माता आँखें बंद करके चारपाई पर बैठ गई। साधु चारपाई उठाकर स्वर्गों में ले गए। स्वर्ग में रहने वाली आत्माएं कहने लगी, ''इस माता ने कितने पुण्य किए हैं कि साधु इसे चारपाई पर उठाकर लाए हैं।''

माता के दिल में **अहंकार** आ गया। वह कहने लगी, ''ये साधु मुझे ऐसे ही उठाकर नहीं लाए, मैंने इन्हें चार-चार रोटियां खिलाई थी।'' माता के **अहंकार** की वजह से साधुओं से चारपाई नहीं उठाई गई, उनके कंधे दुखने लगे। साधुओं ने कहा, ''माता! आँखें खोल।'' आँखें खोलते ही वह माता वापिस अपने घर पर थी। इसलिए **अहंकार** हमें स्वर्गों से भी नीचे ले आता है। ***

धन्य अजायब

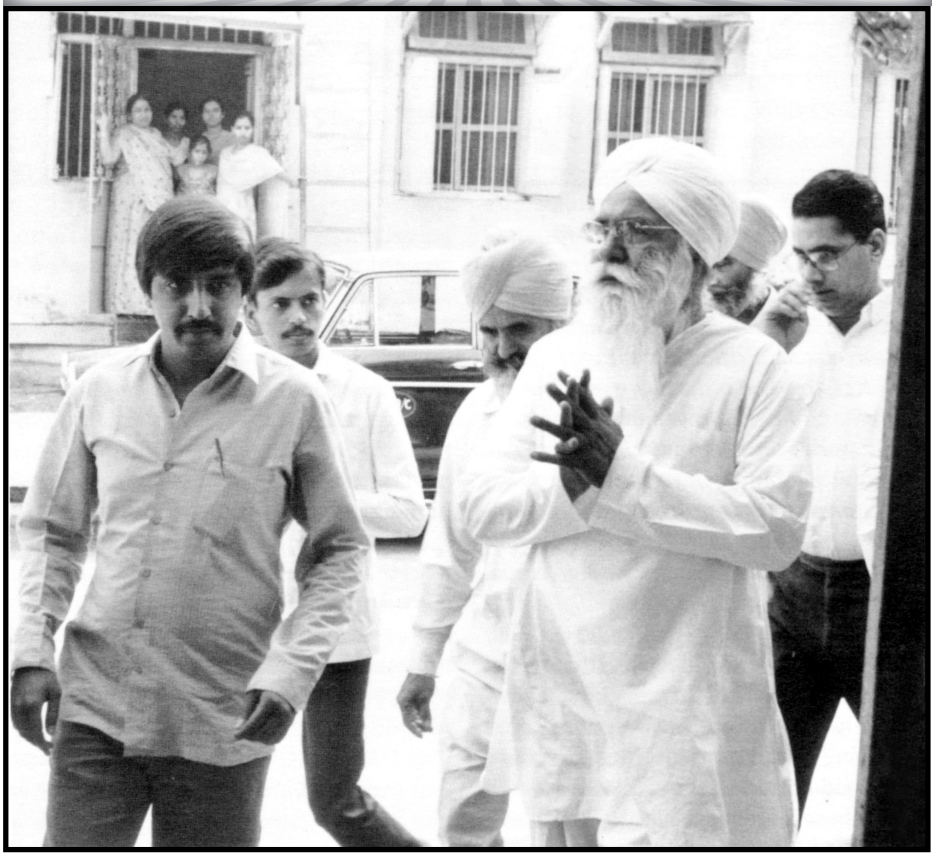

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम:
31 मार्च से 02 अप्रैल 2019

दिल्ली में सतसंग का कार्यक्रम

17, 18 व 19 मई 2019,
कम्युनिटी हॉल, भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार (नजदीक पीरागढ़ी)
नई दिल्ली – 11 00 87
98 10 21 21 38 व 98 18 20 19 99